
गुब्बारा



गुब्बारा

लेखक

ठाकुर श्रीनाथ सिंह

—०—

प्रकाशक

शिशु ज्ञान मन्दिर

प्रयाग

पञ्चम बार] सं० २००५ वि० [मूल्य ॥)

कहानियों की सूची



(१)	गुब्बारा लो !	३
(२)	आला-बाला	५
(३)	सिंह और घड़ियाल	६
(४)	कैसे निकले ?	८
(५)	जादू की तस्वीरें	१०
(६)	[illegible]	७
(७)	छाया के खेल	१८
(८)	जैसे को तैसा	१९
(९)	आँखों को धोखा	२१
(१०)	कल्लू का घर	२२
(११)	चाँद की सैर	२३
(१२)	बसे छोटे-छोटे बाबू	३२
(१३)	कूँ ! कूँ !!	४०
(१४)	बगबुल्ला	४१
(१५)	ओ हो !	४८

200 ८५

परियों की सुन्दर रानी की,
कहानियाँ कहने आता है ॥

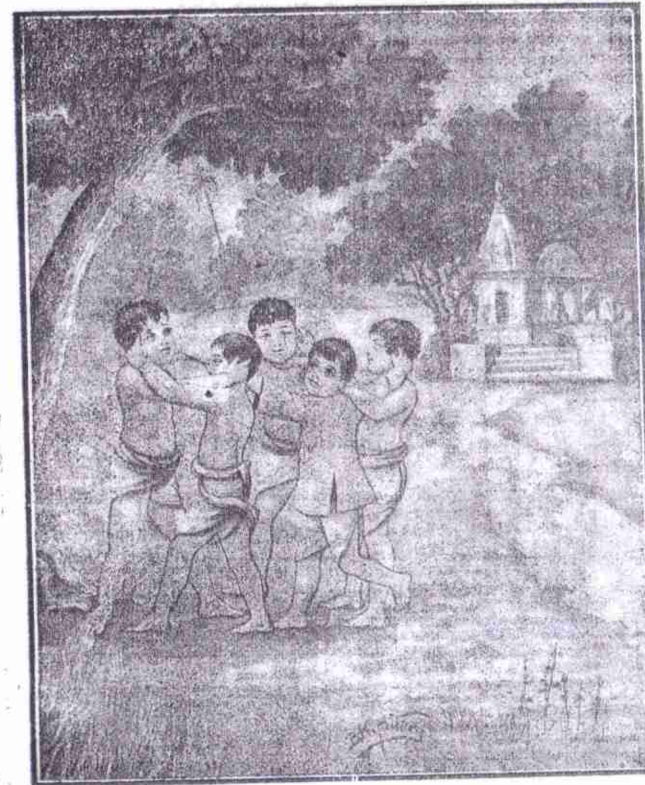
झाँक चन्द्रमा की खिड़की से,
किसने तुमको चुमकारा ?
बात समझ में आएगी सब,
देख-देख यह गुब्बारा ॥

पलकों पर जब निद्रा आती,
सपनों का मेला होता।
कोई बच्चा सुख से सोता ॥
कोई दुख में पड़ रोता ॥

एक साथ बहती है इनमें,
सुख-दुख की वह ही धारा।
अगर चाहते बहना इसमें,
गुब्बारा लो ! गुब्बारा !

*

आला-बाला



आला-बाला, मकड़ी का जाला। चुहिया रोवे, चिड़िया सोवे।
मच्छर गावे, चपत लगावे। बचना लाला, आला-बाला।

सिंह और घड़ियाल

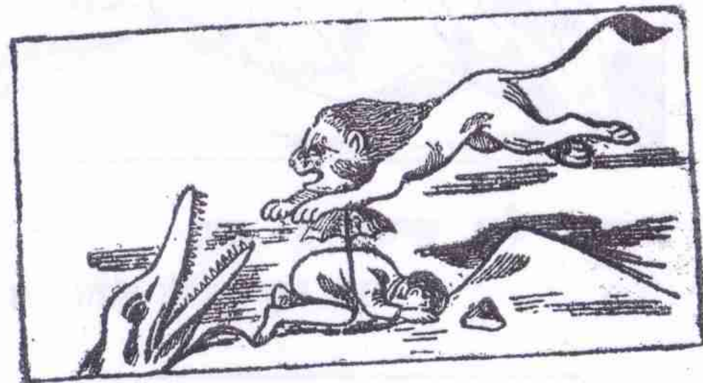
धीरे-धीरे नदी किनारे,
कुरता पहिने बाल सँवारे।



टोपी दिये लगाये छाता,
चला एक लड़का था जाता॥

निकल मगर ने जब मुँह खोला,
बदल गया लड़के का चोला।

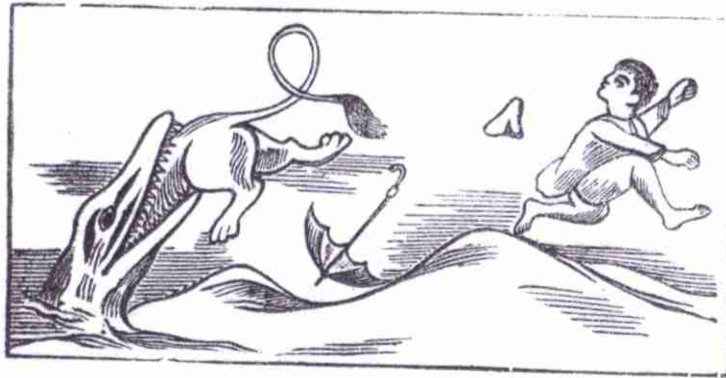
फिर भी दौड़ा, कदम बढ़ाया,
किन्तु शेर सन्मुख से आया॥



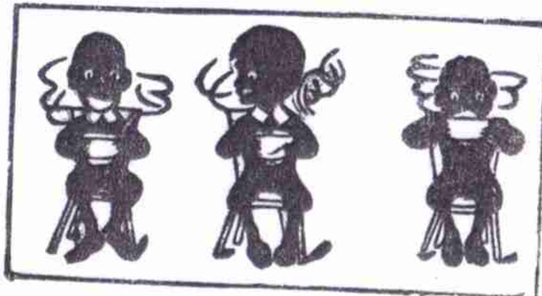
बैठा उलटा मारे डर के,
आड़ खुले छाते की करके।

शेर मगर के मुँह में आया,
यों लड़के ने प्राण बचाया॥

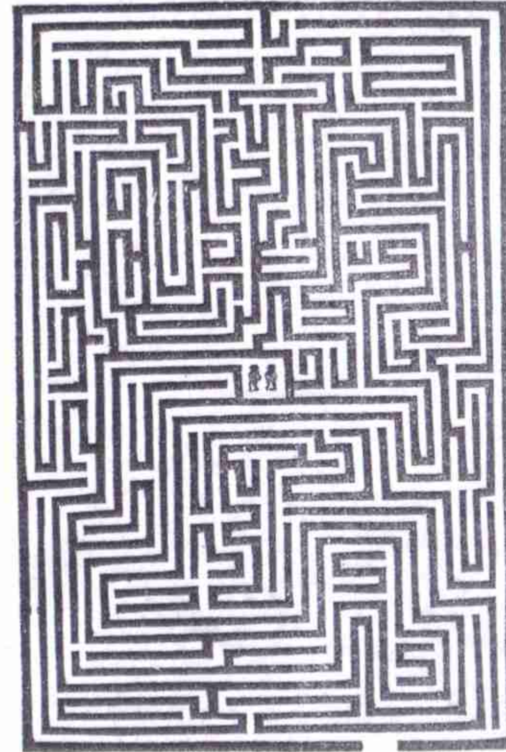
फटा मगर का मुँह जाता है,
शेर न बाहर आ पाता है।



लड़का दौड़ लगाता है अब,
भूल रहा— टोपी छाता सब ॥



कैसे निकलें ?



दो लड़के भूल भुलैया के भीतर पहुँच गये हैं। अब उनको निकलने का रास्ता नहीं मिलता। ज़रा आप बाहर से जा कर उन्हें बुला लाइये।

जादू की तस्वीरें

गुलाब और गोविन्द दो लड़के थे। दोनों साथ-साथ पढ़ते थे। एक दिन दोनों सैर को चले। रास्ते में उन्हें एक घर दिखाई पड़ा। उसमें एक आदमी की खोपड़ी जड़ी थी। उसे देख कर गुलाब ने कहा, "शायद यह जादूगर का घर है।" गोविन्द बोला, "हाँ! हाँ! देखो न, सामने जादूगर खड़ा है।"

दोनों लड़के इस तरह बातें कर ही रहे थे कि जादूगर ने आगे बढ़ कर कहा, "ओहो! तुम लोग यहाँ कैसे आ गये? रास्ते में कोई मिला तो नहीं?"

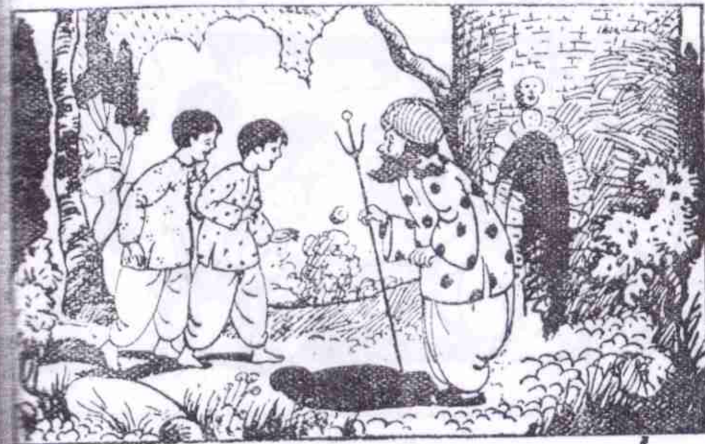
दोनों लड़के बोले, "नहीं!"

जादूगर ने कहा, "वाह! मैं तो अब भी देख रहा हूँ कि चार आदमी—दो लड़के और दो बड़े—यहीं छिपे हैं।" पर गोविन्द और गुलाब को कुछ न दिखाई पड़ा।

* * *

बालको! इस तस्वीर (चित्र सं० १) को चारों तरफ घुमा कर गौर से देखो। शायद तुम्हें वे चारों आदमी जो छिपे हैं दिखाई पड़ जायें।

इसके बाद जादूगर ने कहा, "अच्छा, भीतर आओ!" भीतर भी इसी तरह का अजीब खेल था। अन्दर जाकर जादूगर बोला, "इस कमरे में जहाँ आग जल रही है वहाँ मेरी दो लड़कियाँ



चित्र सं० १

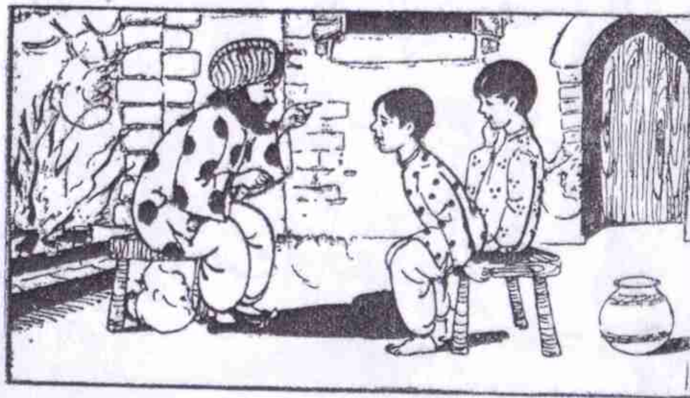
खेला करती हैं। और सामने के दरवाज़े से दो राजकुमार उनके साथ खेलने आते हैं। वे चारों अभी यहीं छिपे हैं। क्या तुम उनको देख सकते हो?"

बालको! मैंने तो इस तस्वीर में उन्हें देख

लिया है। तुम भी तो जरा गौर से इस तस्वीर (चित्र सं० २) को चारों तरफ घुमा कर देखो।

* * *

जादूगर दोनों लड़कों को लिये हुए अपने तहखाने में घुसा और कहने लगा, "इसमें मेरा



चित्र सं० २

भाई रहता है। उसी के पास इस तहखाने की कुञ्जी है। क्या तुम उसे देख सकते हो?"

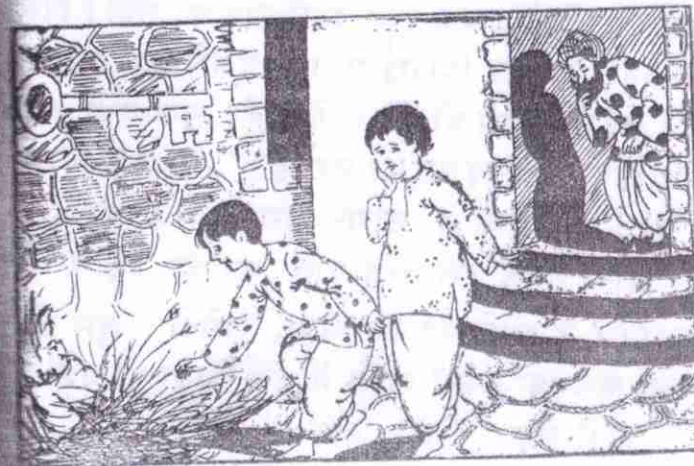
गुलाब ने कहा, "वह रही, कुञ्जी!"

गोविन्द बोला, "और जादूगर का भाई भी यह रहा। अरे, इसे देख कर तो बड़ा डर लगता है।"

बालको! यदि तुम भी गुलाब और गोविन्द की तरह बहादुर हो तो देखो (चित्र सं० ३) कि जादूगर का भाई कहाँ छिपा है और उसकी कुञ्जी कहाँ है?

* * *

फिर जादूगर ने उन बालकों को कुछ खिलाया-



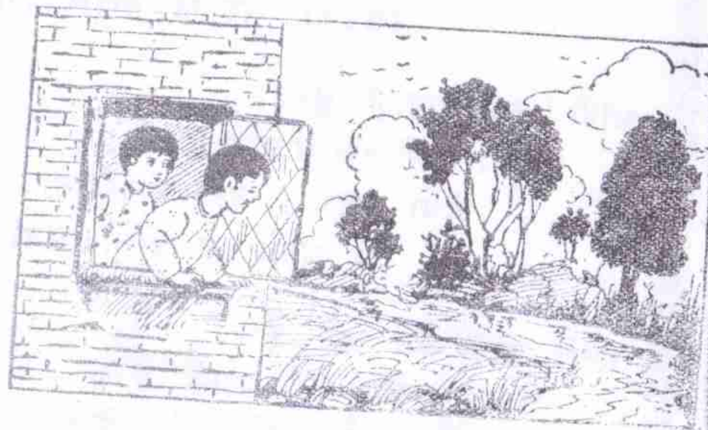
चित्र सं० ३

पिलाया और जरा देर बाद फिर ऊपर ले गया। वहाँ जा कर वह बोला, "खुली खिड़की में से सामने बगीचे की ओर देखो। बोलो, कुछ दिखाई पड़ता है?"

गोविन्द ने कहा—"यह तो बिल्कुल सूना बगीचा है। यहाँ तो कोई भी नहीं है।"

गुलाब ने कहा—"नहीं, मुझे एक लड़की दिखाई पड़ रही है और दो-तीन भेड़ें।"

यह सुन कर जादूगर मुस्कुराया और बोला, "चतुर लड़के इन तीनों भेड़ों को और



चित्र सं० ४

एक लड़की को बात की बात में ढूँढ सकते हैं। अच्छा! चलो, नीचे चलें। (देखो चित्र सं० ४)

*   *   *

दोनों लड़के जादूगर के साथ नीचे के बैठकखाने में आये। जादूगर बोला, "यहाँ मेरी दो लड़कियाँ हैं और उनका मामा भी है। यह मामा

जब अपने सिर पर रकाबी रख लेता है तो लड़कियाँ रूठ जाती हैं। कहो, कोई दिखाई पड़ता है?"

गुलाब ने कहा, "मुझे कुछ नहीं दिखाई देता।"



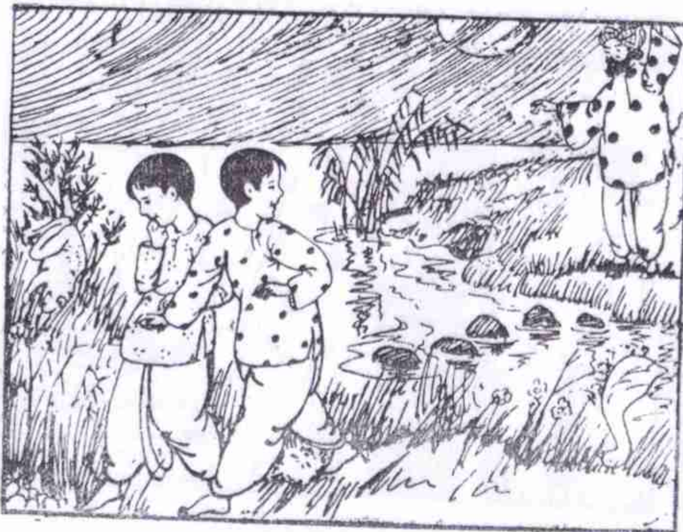
चित्र सं० ५

"मैं भी कुछ नहीं देखता," गोविन्द बोला।

बालको! ज़रा तुम भी देखो (चित्र सं० ५)।

अब गोविन्द और गुलाब एक नदी पार कर के घर जाने लगे। जादूगर ने कहा, "इस रास्ते में भी बहुत से लोग छिपे हैं। श्रीमान मेंढक जी

अपने ब्याह की खुशी में नाच रहे हैं। मेरा शिकारी कुत्ता उन्हें हड़प जाने की कोशिश में है। पानी में एक बतख खड़ा है और एक बिल्ली उसे देख रही है। शायद, तुम लोगों ने भी इन चारों को देख लिया हो।"



चित्र सं० ६

बालको! गुलाब और गोविन्द ने इन चारों को साफ-साफ देख लिया है और हमें विश्वास है कि तुम भी इनको देख लोगे (चित्र सं० ६)।

—०—

बरात

मुन्नू! मुन्नू! आजा! आजा!
बजने लगा द्वार पर बाजा॥
पीं-पीं! चीं-चीं! ढम-ढम! ढम-ढम!
खिड़की पर से देखेंगे हम॥

ओहो! आतिशबाज़ी छूटी।
फुलवारी सी नभ में फूटी॥
ऊँचा खूब उठा गुब्बारा।
हो मानो वह लाल सितारा॥

हाथी घोड़े ऊँट खड़े हैं।
जिन पर लोग चढ़े अकड़े हैं॥
दिखलाई देते हैं ऐसे।
मेले की हों चीज़ें जैसे॥

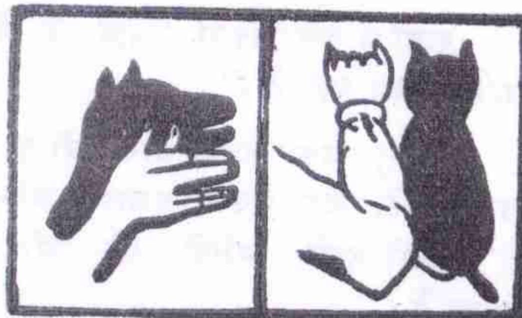
हुई रोशनी कैसी भाई।
चकाचौंध आँखों में आई॥
कई कई परछाईं लेकर।
चलते हैं सब चकित हमें कर॥

चारों तरफ मची है हलचल।
अम्मा ! ज़रा सड़क पर तो चल ॥
देखें, कैसा दूल्हा आया !
कैसा उसने मौर लगाया ?

—०—

छाया के खेल

पहिले चित्र में कुत्ता और दूसरे में बिल्ली बनाना बताया गया है।

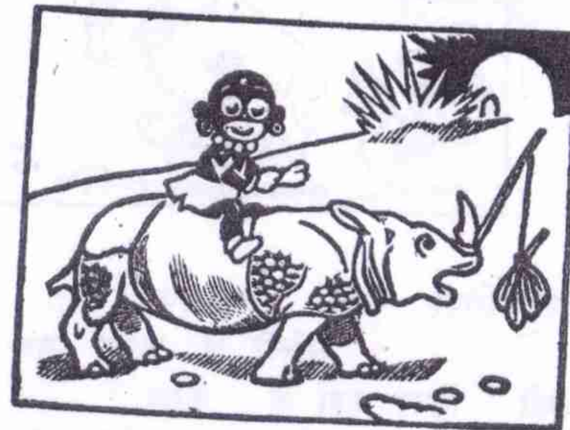


बालको ! रात को दीवाल पर जरा बना कर तो देखो।

—०—

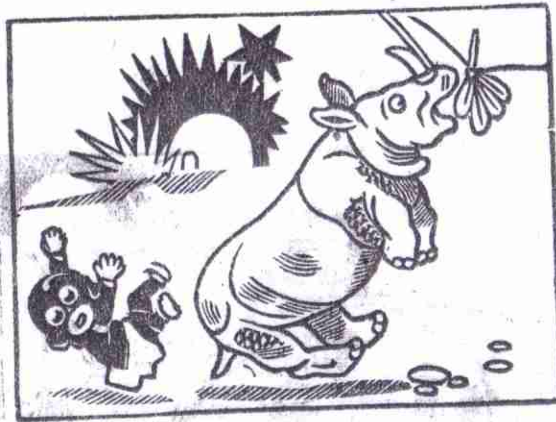
जैसे को तैसा

था कल्लू शैतान अनोखा,
देता फिरता सबको धोखा।
एक रोज़ की सुनो कहानी,
की कैसी उसने शैतानी।



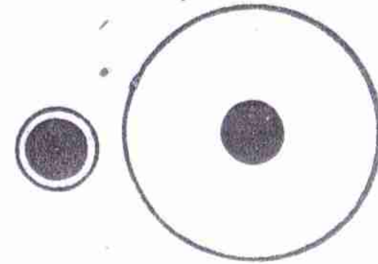
चढ़ बैठा गैंडे के ऊपर,
बाँध सींग में केले सुन्दर।
बोला—"मुझे घुमा लावेगा,
लालच में बढ़ता जावेगा।"

पर गैंडा था बड़ा सयाना,
सहज नहीं था उसे छकाना।
बैठ गया पिछली टाँगों पर,
केले झपट लिये मुँह में भर



दूर गिरा कल्लू चिल्लाया,
आँखों में आँसू भर लाया।
देखो गिरा पड़ा है कैसा,
दण्ड मिला जैसे को तैसा॥

आँखों को धोखा

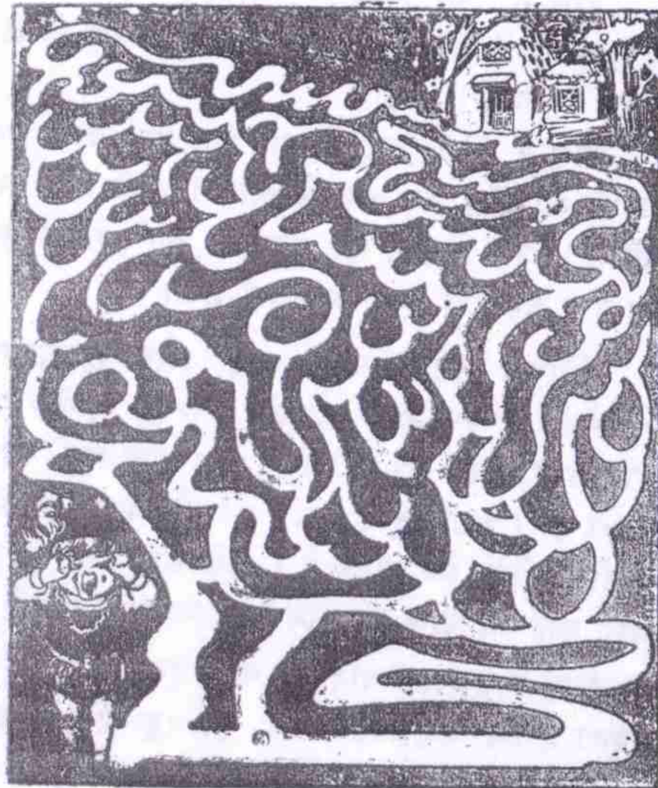


मैंने कुछ बालकों से पूछा, "बीच में बने इन दो काले गोलों में से कौन सा बड़ा है?"

सबों ने उत्तर दिया, "छोटे घेरे में बाईं ओर वाला गोला बड़ा है।"

परन्तु उनका कहना ठीक नहीं है। दोनों गोले बराबर हैं, यह केवल हमारी आँखों का भ्रम है। कभी-कभी आँखों को भी धोखा हो जाता है।

कल्लू का घर



कल्लू का घर एक बड़े घने जंगल में है। वह घर जाने का रास्ता भूल गया है। ज़रा उसके घर जाने का रास्ता तो ढूँढ़ निकालो।

चाँद की सैर



रामू ने देखा कि दो बौने उससे पूछ रहे हैं—"क्या तुम सचमुच चन्द्रमा में चलोगे ?

बसन्त के दिन थे। रामू अपने बाग में आम के पेड़ के नीचे एक पत्थर पर बैठा पुस्तक पढ़ रहा था। पुस्तक में उसने पढ़ा—चाँद पृथ्वी से सवा दो लाख मील से भी ज्यादा दूर है। अगर तुम वहाँ जाना चाहो तो बीसों वर्ष लग जायेंगे और चलते-चलते तुम बुड्ढे हो जाओगे।

यह पढ़कर रामू को बड़ा अचम्भा हुआ। वह नहीं जानता था कि चाँद इतनी दूर है। वह इसी

सोच में डूब गया और सोचने लगा—क्या मैं किसी तरह वहाँ जा सकता हूँ? इतनी लम्बी सीढ़ी तो होती ही नहीं जो मैं उस पर चढ़ कर पहुँच जाऊँ। क्या उड़कर भी नहीं जा सकता?

दोपहर हो गया था। वह पत्थर पर बैठा-बैठा वह थक भी गया था। आम के बौरों की महक से ठण्डी हवा के झकोरे खा-खा कर उसे आलस सा आ गया। उसने जम्भाई ली। पुस्तक हाथ से छूट कर नीचे आ पड़ी और वह ऊँघने लगा।

इस समय भी उसका मन चान्द कि बातों में ही उलझा हुआ था। वह सोच रहा था कि अगर किसी तरह वहाँ पहुँच जाऊँ तो उसमें बैठे बुड्ढे से पूछूँ कि चाँद इतना चमकीला क्यों दिखता है?

इतने ही में उसे "म्याऊँ! म्याऊँ!" की आवाज सुनाई दी। रामू समझा कि बिल्ली है। जब सिर उठा कर देखा उसे तो मालूम हुआ कि दो बौने उसकी ओर उँगली उठाये उसके सामने आकर उससे पूछ रहे हैं, "क्या तुम सचमुच चन्द्रलोक को चलोगे?"

पहिले तो रामू कुछ न बोला, परन्तु

उन्होंने फिर पूछा—"हम लोग अभी चाँद को जाने वाले हैं। अगर तुम चलना चाहो तो चलो।"

रामू ने फिर सुना—"म्याऊँ! म्याऊँ! मेरी दुम पर क्यों खड़े हो गए हटो! अलग खड़े होओ। म्याऊँ! म्याऊँ!"

रामू ने फिर कर देखा कि एक बौना एक बिल्ली की पूँछ पर खड़ा है और बिल्ली उसे हटा रही है। उस बिल्ली को आदमी की तरह बोलते हुए देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

बिल्ली रामू के पास आई और मुस्कुराती हुई बोली, "म्याऊँ! म्याऊँ! रामू, तुम्हें देख मुझे बड़ी खुशी हो रही है। तुम मुझे बड़े प्यारे लगते हो। चलो, तुम्हें चाँद की सैर करा लाऊँ। ये दोनों बौने मेरे भांजे हैं। बड़े का नाम पुनपुन और छोटे का नाम फुनफुन है। म्याऊँ! म्याऊँ!"

रामू ने पूछा, "चाँद तो बड़ी दूर है। जी तो करता है कि चलूँ, पर न मेरे ही पङ्ख लगे हैं और न तुम्हारे ही। चलें, तो कैसे चलें? सवा दो लाख मील से ज्यादा चलना होगा।"

बिल्ली हँस कर बोली, "म्याऊँ! म्याऊँ!

अरे, यह तो सवा दो लाख हाथ भी नहीं है। झटपट चलो। हमारे पास जादू की सीढ़ी है— उसी पर चढ़ चलेंगे। म्याऊँ ! म्याऊँ।"

रामू उठ खड़ा हुआ। दोनों उसका हाथ पकड़ कर चले और बिल्ली आगे-आगे चलने लगी।

बाग के बाहर एक नीम का पेड़ था। एक सीढ़ी उसी से लगी खड़ी थी। बिल्ली वहाँ आकर रुक गयी और बोली—"म्याऊँ ! म्याऊँ ! लो, इसी पर चढ़ जाओ। जल्दी करो ! म्याऊँ ! म्याऊँ !"

रामू ने सीढ़ी देखी और सोचने लगा कि यह कैसी जादू की सीढ़ी है। इस पर चढ़ कर तो हम नीम की टहनियों तक ही पहुँचेंगे।

बिल्ली उसे असमञ्जस में देख कर उसके मन की बात ताड़ गई और बोली, "म्याऊँ ! म्याऊँ ! जल्दी चढ़ो, देर मत करो। हमारी जादू की सीढ़ी यही है। मैं सब से ऊपर जाती हूँ। तुम पुनपुन और फुनफुन के साथ बैठो। म्याऊँ ! म्याऊँ !"

इतना कह बिल्ली लपकी और सीढ़ी के ऊपर जा

पहुँची। उसके ऊपर जाते ही जादू की सीढ़ी ने अपने दोनों पङ्ख फैला दिए।



बिल्ली लपकी और ऊपर जा पहुँची। उसके ऊपर जाते ही जादू की सीढ़ी ने अपने दोनों पङ्ख फैला दिए।

बिल्ली फिर चिल्लायी — "म्याऊँ ! म्याऊँ ! रामू! चलना हो तो फौरन बैठो। लो, सीढ़ी उड़ती है—एक-दो-तीन

म्याऊँ! म्याऊँ ?"

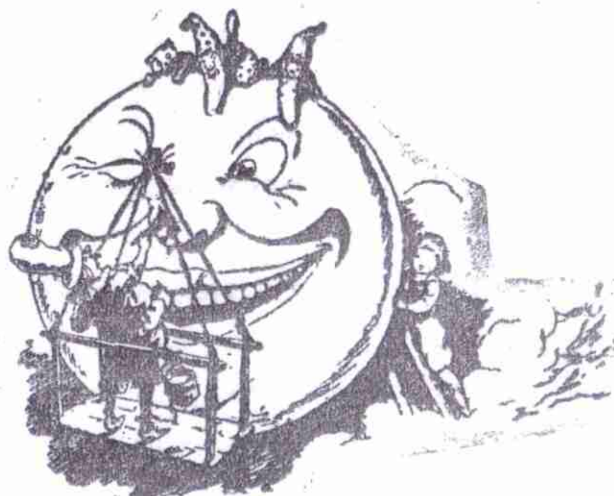
रामू झट चढ़ गया। सीढ़ी ऊपर उठी। सीढ़ी के पङ्ख बड़ी तेजी से फड़फड़ाने लगे। रामू ने देखा कि सीढ़ी बात की बात में इतनी ऊँची उठ आई है कि धरती बिलकुल दिखाई नहीं देती। चारों तरफ तारे ही तारे नज़र आते हैं रामू ने यह भी देखा कि उस बिल्ली की आँखें मोटरगाड़ी के लैम्पों की तरह तेज़ चमक रही हैं।

सीढ़ी के रास्ते में एक बड़ा भारी बादल आ गया। सीढ़ी उसे चीर कर पार करने लगी। बादल में पड़ रामू का दम घुटने लगा, पर वह करता ही क्या ? डर के मारे सीढ़ी से और भी चिपट गया।

एकाएक उसे झटका सा लगा। सीढ़ी बादल के सहारे टिक गई। पुनपुन और फुनफुन ऊँघ रहे थे। झटका लगने से गिरते-गिरते बचे। रामू चौंक उठा। बिल्ली चिल्लायी—"म्याऊँ ! म्याऊँ! लो, आ गये! उतरो! म्याऊँ ! म्याऊँ !"

रामू ने सिर उठाकर देखा कि सीढ़ी बादल और चाँद के सहारे टिकी खड़ी है और बिल्ली चाँद पर चढ़ गयी है।

रामू का मन खिल गया। वह भी उठा। पुनपुन और फुनफुन को साथ ले बिल्ली से बोला, "मुझे उस बुड्ढे आदमी के पास ले चलो। मैं उससे पूछूँगा कि चाँद इतना चमकीला क्यों है ? क्या वह मुझे बता देगा ?"



रामू ने देखा एक बड़ी अजीब शक्ल का बुड्ढा आदमी चाँदी के घोल से चाँद को पोत रहा है।

बिल्ली खिलखिला कर हँसी और बोली, "म्याऊँ! म्याऊँ? आओ रामू? चोटी पर चढ़ चले

आओ ? तुम्हें बुड्ढा खुद ही दिखाई दे जाएगा। म्याऊँ ? म्याऊँ ?"

बिल्ली और बौने तो ऊपर चढ़ गये, पर रामू नहीं चढ़ पाया। सीढ़ी पर खड़े ही खड़े वह नीचे ही से झाँकने लगा।

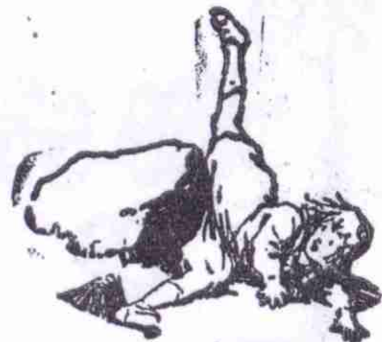
उसने देखा एक बड़ी अजीब शक्ल का बुड्ढा बड़े मजे में खड़ा है और चाँदी के घोल से चाँद को पोत रहा है। बुड्ढे ने इन्हें देखा तो अपनी पोतने की कूर्ची एक ओर रख बड़ी खुशी से चिल्लाया, "अरे ! तुम लोग यहाँ कहाँ ? आओ, मेरे पास आओ !"

ये जवाब भी नहीं दे सके कि इतने ही में इनकी सीढ़ी सरकने लगी। रामू ने देखा कि जिस बादल के सहारे सीढ़ी खड़ी थी वह चलने लगा है। वह बड़ी ज़ोर से चिल्लाया। बिल्ली, पुनपुन और फुनफुन तीनों फ़ौरन ही सीढ़ी पकड़ने को लपके।

सरकते-सरकते सीढ़ी बादल पर आ पड़ी। वे भी चाँद से कूद कर बादल पर आ गिरे और किसी तरह सीढ़ी पकड़ कर उस पर चढ़ गये।

दैवयोग से एकाएक बीच से बादल फट गया। अब तो रामू, पुनपुन, फुनफुन और बिल्ली सब बड़ी तेजी से नीचे की ओर गिरने लगे। बिल्ली म्याऊँ - म्याँऊँ करना भूल गई। पुनपुन फुनफुन अपनी लम्बी दाढ़ियों सहित ऊपर आकाश में कलाबाजियाँ खाने लगे। जरा देर में ही सब जमीन पर आ गिरे।

❀ ❀ ❀



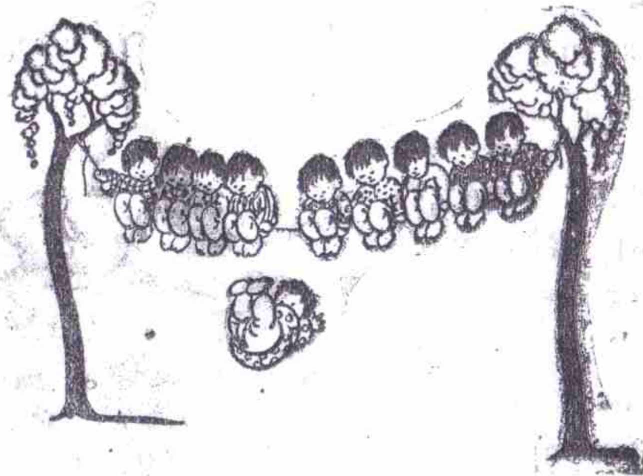
रामू ने आँखें खोलीं तो देखा कि नींद के झोंके में वह नीचे आ गिरा है।

रामू ने आँखें खोलीं तो देखा कि नींद के झोंके से वह पत्थर से नीचे आ गिरा है। यह सब उसने सपना देखा था। म्याऊँ-म्याऊँ का शब्द उसे अब भी सुनाई दे रहा था। थोड़ी देर में उसे मालूम हुआ पास ही की झाड़ी में एक बिल्ली बैठी "म्याऊँ-म्याऊँ !" कर रही है।

—

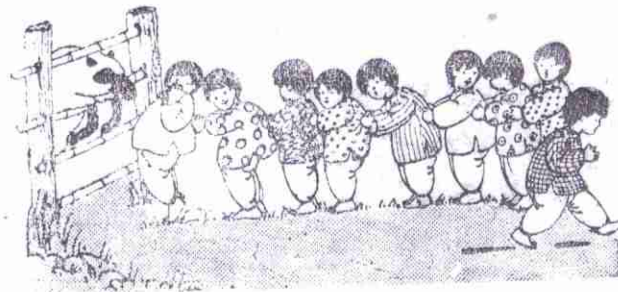
दस छोटे-छोटे बाबू

दस छोटे - छोटे बाबू,
चिड़ियों सा कर कलरव।

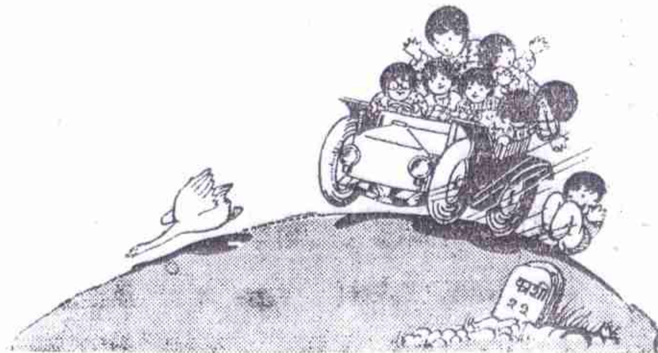


थे झूले रहे रस्सी पर,
इक गिरा - रह गये नव ॥

नव छोटे - छोटे बाबू,
फाटक के गिनते काठ।



इक भगा भेड़ के डर से,
बस शेष रह गये आठ ॥



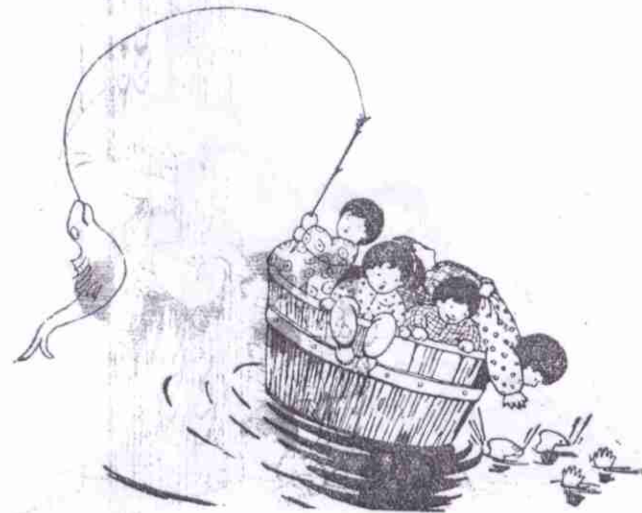
आठ छोटे - छोटे बाबू,
चढ़ मोटर पर दिन रात—

फिरते थे, एक गया गिर,
तब शेष रह गये सात ॥



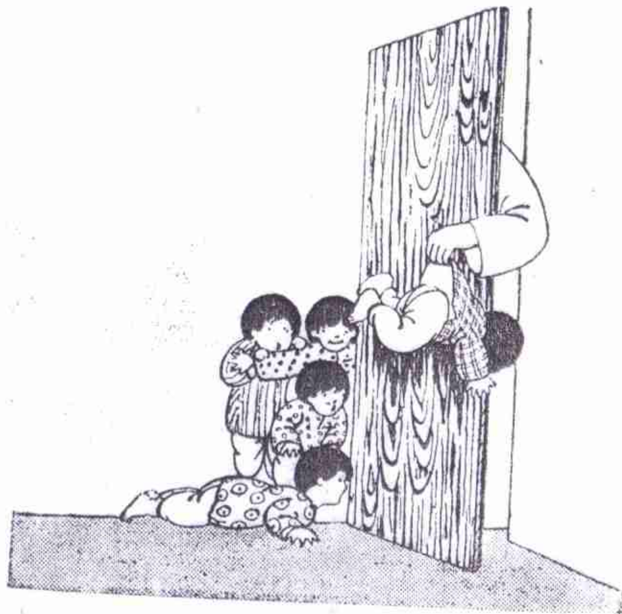
सात छोटे - छोटे बाबू,
फल चुरा रहे थे, पै--
पकड़ लिया इक माली ने,
तब बाकी थे बस छै ॥

छै छोटे - छोटे बाबू,
मारे मछली--है साँच।



पर डूबा इक पानी में,
तो शेष गये रह पाँच ॥

पाँच छोटे - छोटे बाबू,
छिप देख रहे थे द्वार।



इक छिपे हाथ ने पकड़ा,
तो शेष रह गये चार॥

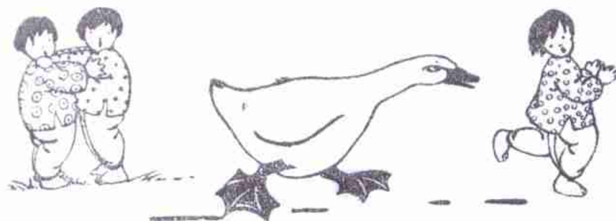
चार छोटे - छोटे बाबू,
लख घोड़ा बढ़े नवीन।



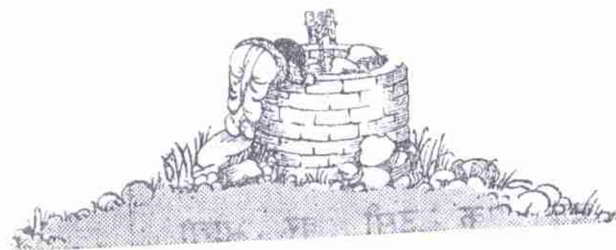
चढ़ एक उसी पर भागा,
तो शेष गये रह तीन॥

तीन छोटे - छोटे बाबू,
लख बतख कह उठे—"हो!"

इक पड़ा उसी के पाले,
तो शेष गये रह दो ॥

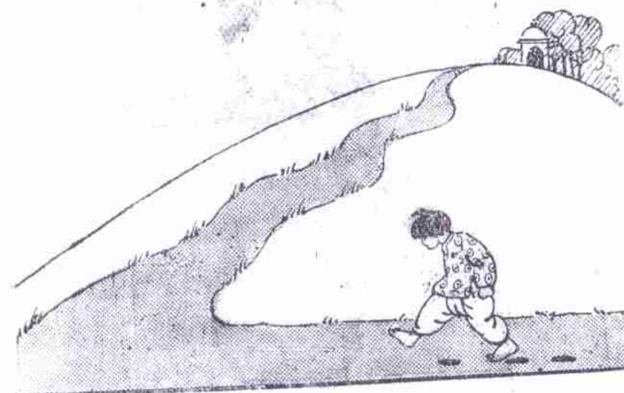


दो छोटे - छोटे बाबू,
थे लखते कुए अनेक ।



इक उलटा गिरा किसी में,
तो शेष गया रह एक ॥

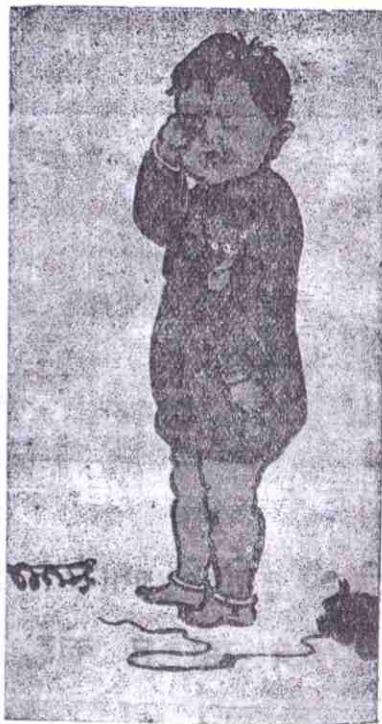
इक छोटे - छोटे बाबू,
ने ली जङ्गल की राह ।



मैं कैसे तुम्हें बताऊँ ?
अब रहा न कोई, आह !

—०—

ऊँ ! ऊँ !!



ऊँ ! ऊँ ! क्यों रोते हो भैया ?
लेंगे नहीं तुम्हारी गैया ॥

बमबुल्ला

हिमालय पहाड़ के उस पार जहाँ से ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है, एक अजीब तरह के आदमी रहते थे। उनको सब गलफुल्ला कहते थे। कोई-कोई कहते हैं कि ये लोग अब भी वहाँ रहते हैं।

अगर तुम किसी गलफुल्ले को देखोगे तो ताज्जुब करोगे। इनका शरीर बहुत छोटा होता है। यहाँ तक कि बालिश्त डेढ़ बालिश्त से बड़ा नहीं होता। पर इनका सिर हम लोगों के सिर से भी बहुत बड़ा होता है।



बमबुल्ला बादलों में उछल गया है।

ये लोग जितने छोटे होते हैं उतने ही खोटे भी होते हैं। दिन भर खेलना और खाना—यही

इनका काम है। लेकिन एक बात का इनको बहुत ध्यान रखना पड़ता है—वह है इनका कूदना।

हम तुम कूद कर जमीन पर आ सकते हैं, पर गलफुल्ला अगर कूदता है तो कूदता ही चला जाता है। फुटबाल की तरह जब वह ऊपर से नीचे आता है तो फिर ऊपर को उछल जाता है। इस तरह जब तक पकड़ नहीं लिया जाता, वह बराबर उछलता रहता है।

कभी-कभी गलफुल्ला लड़के इतने उछल जाते हैं कि पहाड़ के पार न जाने कहाँ जा गिरते हैं और फिर कभी लौट कर घर वापस नहीं आ पाते। इसलिये उनके मा-बाप उन्हें उछलने-कूदने को बराबर मना करते रहते हैं।

गलफुल्लों में एक बहुत ही छोटा लड़का था। उसका नाम था बमबुल्ला। बमबुल्ला बड़ा ही शैतान लड़का था। उसकी मा उसे कूदने के लिये मना करती थी; पर बमबुल्ला इस बात की बिलकुल परवाह न करता था। धीरे-धीरे बमबुल्ला बड़ा होने लगा। उसके बाप ने कहा, "जब

यह खूब बड़ा हो जायगा तो शरारत न करेगा। जब तक बच्चा है तभी तक इसकी देख-भाल करनी पड़ेगी।"

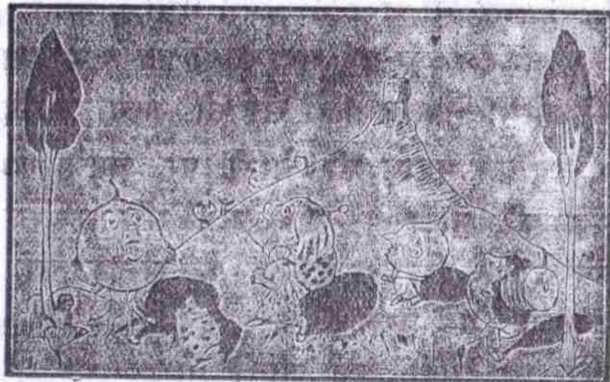
लेकिन उसके बाप का यह विचार बिलकुल गलत निकला। बमबुल्ला ज्यों-ज्यों बड़ा हुआ त्यों-त्यों और भी शरारती होता गया।

एक दिन जब वह मदरसे से पढ़ कर आया, उसने सोचा—आज कहीं सैर को जाना चाहिए। बस, वह एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगा। पहाड़ की चोटी पर एक ऊँची मीनार थी। यह देखने के लिये कि इस मीनार के अन्दर क्या है, बमबुल्ला उसमें घुसा। एक सुन्दर सीढ़ी मीनार के अन्दर से चोटी तक जाती थी। बमबुल्ले ने सोचा—जब यहाँ तक आ गया तो थोड़ी दूर और सही। मीनार की चोटी और उस पर से पहाड़ों की सुन्दरता तो देखता ही चलूँ।

इधर बमबुल्ला मीनार की सैर कर रहा था, उधर उसके मा-बाप उसे खोजने में लगे थे। वे घबरा रहे थे कि बमबुल्ला उछल कर चीन देश में न चला गया हो। अन्त में एक आदमी की निगाह

मीनार पर गई। वहाँ उसने देखा कि बमबुल्ला की तरह का कोई लड़का मीनार की चोटी पर खड़ा हुआ है।

यह समाचार पाते ही बेचारे मा-बाप घबरा



बमबुल्ला को बचाने के लिए गलफुल्ले लोगों के झुण्ड के झुण्ड मीनार की ओर चल पड़े।

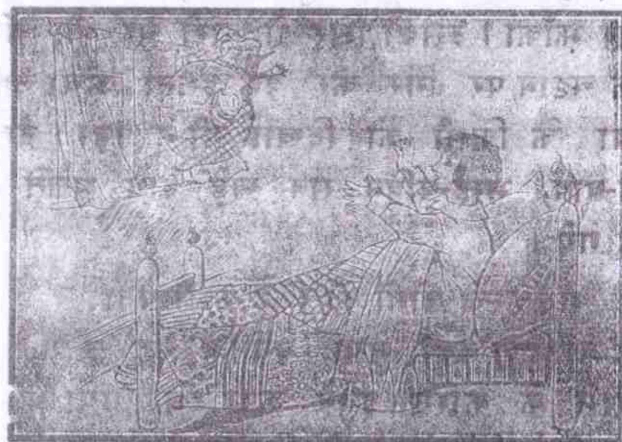
गये। उस मीनार पर से कितने ही लड़के गिर कर उछल गये थे और ला पता हो गये थे। बमबुल्ला के बाप ने कहा, "अब इसका बचना कठिन है।" बमबुल्ला को बचाने के लिए गलफुल्ले लोगों के झुण्ड के झुण्ड मीनार की तरफ चल पड़े।

बमबुल्ले ने चोटी पर से देखा कि उसके मा-बाप तथा कुटुम्ब परिवार के अन्य लोग मीनार की तरफ चले आ रहे हैं। बमबुल्ला कुछ डरा, क्योंकि वह उन लोगों से बता कर नहीं आया था। इस समय कुछ लोग मीनार के पास पहुँच गये थे। उन्हें देखने के लिये बमबुल्ले ने झुक कर नीचे की ओर झाँका। उसका सिर तो भारी था ही, नीचे एक चट्टान पर गिर कर वह इतना ऊँचा उछल गया कि किसी को दिखाई भी न पड़ा। उसके मा-बाप, भाई-बहिन सब खड़े हाथ मलते ही रह गये।

गलफुल्ले लोगों को फिर कभी पता न चला कि बमबुल्ला कहाँ गया, क्योंकि वह ऊँचाई से गिरने के कारण इतने ऊपर उछल गया था कि जब फिर नीचे आया तो बिलकुल एक दूसरे ही देश में पहुँचा।

बमबुल्ला बहुत दूर एक अकेले लड़के के पास पहुँचा। वह लड़का कुछ बीमार था और अपने बिस्तर पर पड़ा था। उसके कमरे की खिड़की खुली हुई थी। खिड़की में से वह चन्द्रमा की शोभा

देख रहा था। एकाएक उसने देखा कि खिड़की की ओर कोई गोल चीज चली आ रही है। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो चन्द्रमा ही टूट कर आ रहा है। उसने अपनी बाहें फैला दीं और अपने बिस्तर की ओर आते हुए बमबुल्ले को पकड़ लिया।



यदि लड़का उसे पकड़ न लेता तो शायद बमबुल्ला फिर उछलता और इस बार उछल कर न जाने कहाँ चला जाता ?

गुदगुदे बिछौने पर अपना आसन जमते देख बमबुल्ले ने कहा, "हे भगवान ! फिर से पृथ्वी

पर उतर आने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। पर क्या कोई बतलावेगा कि मैं हूँ कहाँ ?"

लड़के ने कहा, "यहाँ, मेरे साथ !"

बमबुल्ला बोला, "यहाँ कहाँ ? क्या तुम मेरे घर का रास्ता बताओगे जहाँ गलफुल्ले लोग रहा करते है ? मैं अपने घर जाना चाहता हूँ।"

लड़के ने कहा, "नहीं, मैंने ऐसे आदमियों के बारे में कभी कुछ नहीं सुना। पर तुम यहाँ मेरे साथ रह सकते हो। हम तुम दोनों मिल कर बड़े मजे में रहेंगे और खेला करेंगे।"

बमबुल्ला बोला, "अच्छी बात है। पर जब मैं अपने घर का पता पाऊँगा तो फौरन चला जाऊँगा।"

बमबुल्ले को उसके घर का रास्ता कभी न मिला। अब वह उस लड़के के साथ बड़े मजे में खेला करता है। पर कभी-कभी वह बहुत उदास हो जाता है और मन ही मन कहता है, "अच्छा होता यदि मैं अपने मा-बाप का कहना मानता।"

—:*:—

ओ हो !



खेलने की है मन में चाह।
गेंद पर क्या बैठे हैं, वाह !

